KARBALA WALON KE KARIMANA ANDAZ

(HINDI BAYAAN)

करबला वालों के करीमाना अन्दाज़

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में होने वाला

सुन्नतों भरा बयान

28-September-2017

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब कभी दाख़िले मस्जिद हों, याद आने पर ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लिया करें कि जब तक मस्जिद में रहेंगे, ए'तिकाफ़ का सवाब मिलता रहेगा । याद रखिये ! मस्जिद में खाने, पीने, सोने या सह़री, इफ़्त़ारी करने, यहां तक कि आबे ज़मज़म या दम किया हुवा पानी पीने की भी शरअ़न इजाज़त नहीं ! अलबत्ता अगर ए'तिकाफ़ की निय्यत होगी, तो येह सब चीज़ें ज़िमनन जाइज़ हो जाएंगी । ए'तिकाफ़ की निय्यत भी सिर्फ़ खाने, पीने या सोने के लिये नहीं होनी चाहिये बल्कि इस का मक़्सद **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा हो ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं दुरूद की कसरत करता हूं, मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ने के लिये कितना वक़्त मुक़र्रर करूं ? फ़रमाया : जितना चाहो कर लो । उन्हों ने अ़र्ज़ की : चौथाई ? फ़रमाया : जितना चाहो कर लो लेकिन अगर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़ोगे, तो बेहतर है । अ़र्ज़ की : निस्फ़ ? फ़रमाया : जितना चाहो पढ़ो मगर ज़ियादा पढ़ोगे, तो बेहतर है । अ़र्ज़ की : तिहाई ? फ़रमाया : जितना चाहो पढ़ो मगर ज़ियादा पढ़ोगे, तो बेहतर है । अ़र्ज़ की : मैं सारा वक़्त आप पर दुरूदे पाक पढ़ता रहूंगा । फ़रमाया : फिर तो येह अ़मल तुम्हारी परेशानियों को किफ़ायत करेगा और तुम्हारी मग़फ़िरत का सबब बन जाएगा । (مستدرک، کتاب التفسیر، باب اکثروا علی الصلوۃ...الخ، ۳/۱۹۸، حدیث:۳۶۳۱)

दूर हो जाएं दुन्या के रन्जो अलम   हो अ़त़ा अपना ग़म, दीजिये चश्मे नम
मालो दौलत की कसरत का त़ालिब नहीं   तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 604)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرَانِی ج٦ ص ١٨٥ حديث ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا الله، تُوبُوْا اِلَى الله वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे मोह़र्रमुल ह़राम हमारे दरमियान जारी व सारी है। येह महीना हर साल हमें शुहदाए करबला की और बिल ख़ुसूस नवासए मुस्त़फ़ा, सय्यिदुश्शुहदा, इमामे आ़ली मक़ाम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की याद दिलाता है क्यूंकि आज से सदियों पहले 61 हिजरी को तारीख़े इस्लाम में ह़क़ व बात़िल के दरमियान एक अ़ज़ीम मा'रिका पेश आया जिसे **वाक़िअ़ए करबला** के नाम से याद किया जाता है। इस मा'रिके में शुहदाए करबला رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم के इस्तिक़ामत भरे अन्दाज़ ने तमाम अहले ह़क़ को बात़िल के सामने डट जाने और ज़रूरत पड़ने पर दीने इस्लाम की ख़ातिर जान का नज़राना पेश करने का अ़ज़ीमुश्शान सबक़ दिया।

www.dawateislami.net

अगर सुल्ताने करबला, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ चाहते, तो यज़ीदियों को तबाह व बरबाद कर सकते थे मगर इस्तिता़अ़त और क़ुदरत के बा वुजूद ख़ून के प्यासों पर भी करम नवाज़ी फ़रमाई और जंग में पहल न की बल्कि आप आख़िरी वक़्त तक उन को समझाते रहे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डराते रहे। मैदाने करबला में हुज्जत पूरी करने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने घोड़े पर सुवार हो कर यज़ीदी लश्कर का रुख़ किया और जो कुछ फ़रमाया उस का हर लफ़्ज़ करम नवाज़ी पर मबनी था। चुनान्चे,

आप ने इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! मेरी बात सुनो और जल्द बाज़ी का मुज़ाहरा न करो, ह़त्ता कि मैं तुम्हें उस चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ नसीह़त न कर लूं कि जो मुझ पर लाज़िम हो चुका है और अपने आने का उ़ज़्र बयान न कर लूं। पस अगर तुम मेरा उ़ज़्र क़बूल कर लो, मेरी बात की तस्दीक़ करो और मेरे बारे में इन्साफ़ से काम लो, तो तुम इस मुआ़मले में बा मुराद हो जाओगे और तुम से मेरे मुतअ़ल्लिक़ कोई मुवाख़ज़ा (या'नी सुवाल) भी न होगा। हां ! अगर तुम मेरा उ़ज़्र क़बूल नहीं करते, तो सुनो ! फिर येह आयाते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

فَاَجْمِعُوْۤا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا یَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَیْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْۤا اِلَیَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ (پ۱۱، یونس:۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो मिल कर काम करो और अपने झूटे मा'बूदों समेत अपना काम पक्का कर लो फिर तुम्हारे काम में तुम पर कुछ गुन्जलक (उल्झन व पोशीदगी) न रहे फिर जो हो सके मेरा कर लो और मुझे मोहलत न दो।*

اِنَّ وَلِیِّ اللّٰهُ الَّذِیْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ وَهُوَ یَتَوَلَّى الصّٰلِحِیْنَ (پ۹، الاعراف:۱۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक मेरा वाली **अल्लाह** है जिस ने किताब उतारी और वोह नेकों को दोस्त रखता है।*

फिर आप ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना करने के बा'द (उन यज़ीदियों से) फ़रमाया : तुम लोग मेरी निस्बत के बारे में ग़ौर कर लो कि मैं कौन हूं ? क्या तुम्हारे लिये मेरा क़त्ल जाइज़ व दुरुस्त है ? क्या मैं तुम्हारे नबी

www.dawateislami.net

का नवासा नहीं ? क्या सय्यिदुश्शुहदा, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे वालिद के चचा नहीं ? क्या ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़रे त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे चचा नहीं ? क्या तुम तक मेरे और मेरे भाई से मुतअ़ल्लिक़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह इरशाद न पहुंचा था कि तुम दोनों नौजवानाने जन्नत के सरदार हो ? तो अगर तुम मेरी बात की तस्दीक़ करो (तो सुन लो !) कि येही ह़क़ है क्यूंकि मैं ने उस वक़्त से झूट नहीं बोला जब से मुझे मा'लूम हुवा है कि झूट **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सख़्त ना पसन्द है और अगर तुम मुझे झुटलाते हो, तो ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह, अबू सईद, सह्ल बिन सा'द, ज़ैद बिन अरक़म या अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم اَجْمَعِیْن से पूछ लो क्यूंकि इन सब ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से (मेरे मुतअ़ल्लिक़) येह फ़ज़ाइल सुन रखे हैं। क्या मेरी इस नसीह़त में तुम्हारे लिये कोई ऐसी बात नहीं जो तुम्हें मेरा ख़ून बहाने से रोक सके ? फिर आप ने फ़रमाया : अगर तुम्हें मेरी बात में या मेरे मुतअ़ल्लिक़ नबी का नवासा होने में कोई शक हो, तो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मश्रिक़ो मग़रिब में मेरे सिवा, तुम में या तुम्हारे सिवा किसी और क़ौम में कोई नबी का नवासा मौजूद नहीं। ज़रा बताओ तो सही ! क्या तुम्हें मुझ से अपने किसी मक़्तूल का बदला त़लब करना है ? या मैं ने तुम्हारा माल ज़ाएअ़ कर दिया है कि उस के बदले माल चाहते हो ? या फिर अपने ज़ख़्मियों का क़िसास दरकार है ? (आख़िर किस चीज़ का बदला चाहते हो ?) वोह बदबख़्त ख़ामोश रहे। आप ने फ़रमाया : ऐ शबस बिन रिबई ! ऐ ह़ज्जार बिन अबजर ! ऐ क़ैस बिन अश्अ़स ! ऐ ज़ैद बिन ह़ारिस ! क्या तुम लोगों ने ही मुझे ख़ुत़ूत़ भेज कर नहीं बुलवाया था ? वोह साफ़ मुकर गए और बोले : हम ने तो ऐसा नहीं किया था ! आप ने फ़रमाया : क्यूं नहीं ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम ही लोगों ने तो ऐसा किया था। फिर फ़रमाया : ऐ लोगो ! अगर तुम मेरी बैअ़त करना पसन्द नहीं करते, तो मुझे छोड़ दो ताकि मैं किसी मह़फ़ूज़ जगह चला जाऊं। बद नसीब क़ैस बिन अश्अ़स बोला : आप इब्ने ज़ियाद के हुक्म के आगे सरे तस्लीम ख़म कर लें (तो आप को छुटकारा मिल सकता है)। आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं हरगिज़ उस की बैअ़त नहीं

www.dawateislami.net

करूंगा । **अल्लाह** के बन्दो ! मैं अपने और तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की पनाह लेता हूं इस से कि तुम मुझे संगसार करो । मैं तुम्हारे और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की पनाह लेता हूं हर उस मुतकब्बिर से जो ह़िसाब के दिन पर यक़ीन नहीं रखता ।

(الکامل فی التاریخ، سنۃ احدی وستین، ذکر مقتل الحسین، ۳/۴۱۸-۴۱۹ ملتقطا وملخصاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बदबख़्त यज़ीदियों ने नसीह़त पर मुश्तमिल आप के इस करीमाना अन्दाज़ का जवाब सख़्त अज़िय्यतें और तक्लीफ़ें पहुंचा कर दिया मगर आप को मुसीबतों का हुजूम ह़क़ से न हटा सका और आप के अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल में कोई कमी न आई । ह़क़ व सदाक़त का ह़ामी मुसीबतों की भयानक घटाओं से न डरा और तूफ़ाने बला के सैलाब से उस की साबित क़दमी में कोई फ़र्क़ न आया, दीन का शैदाई दुन्या की आफ़तों को ख़याल में न लाया । अगर आप यज़ीद की बैअ़त करते, तो वोह तमाम लश्कर आप के क़दमों में होता, आप का एह़तिराम किया जाता, ख़ज़ानों के मुंह खोल दिये जाते और दौलते दुन्या क़दमों पर लुटा दी जाती मगर जिस का दिल हुब्बे दुन्या से ख़ाली हो और दुन्या की ना पाएदारी का राज़ जिस पर वाज़ेह़ हो, वोह दुन्या के नुमाइशी रंगो रूप पर क्या नज़र डाले ? ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने राह़ते दुन्या के मुंह पर ठोकर मार दी और राहे ह़क़ में पहुंचने वाली मुसीबतों का ख़ुश दिली से इस्तिक़्बाल किया और इस क़दर आफ़तों और बलाओं के बा वुजूद यज़ीद जैसे फ़ासिक़े मो'लिन (या'नी ए'लानिया गुनाह करने वाले) शख़्स की बैअ़त का ख़याल भी अपने क़ल्बे मुबारक में न आने दिया, अपना घर लुटाना और अपना ख़ून बहाना मन्ज़ूर किया मगर मुसलमानों की तबाही व बरबादी गवारा न फ़रमाई और इस्लाम की इ़ज़्ज़त पर ह़र्फ़ नहीं आने दिया । ख़ुदा की क़सम ! मैदाने करबला में, करबला वालों का इस्लाम की ख़ातिर अपनी जानों का नज़राना पेश करना रहती दुन्या के मुसलमानों के लिये बहुत बड़ी करम नवाज़ी थी । इस के इ़लावा भी इन ह़ज़रात के किरदार के बहुत से पहलू मुसलमानों के लिये क़ाबिले तक़्लीद नुमूना हैं । आइये ! आज के बयान में अ़फ़्वो दरगुज़र, मेहमान नवाज़ी और मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही वग़ैरा से मुतअ़ल्लिक़ "**करबला वालों के करीमाना अन्दाज़**" सुनते हैं । चुनान्चे,

www.dawateislami.net

करीम हो तो ऐसा !

एक आदमी के पास बीस या तीस ऊंट थे मगर वोह उन के खाने, पीने का कोई इन्तिज़ाम नहीं कर पा रहा था । किसी शख़्स ने उसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर होने का मश्वरा दिया, लिहाज़ा वोह शख़्स अपनी मुराद ले कर चल पड़ा । जिस वक़्त वोह ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में पहुंचा, तो आप अपने ख़ादिमीन के साथ खाना खाने में मसरूफ़ थे, उस ने दिल में सोचा कि शायद येह मुझे खाने में शरीक न करें । अभी वोह येह सोच ही रहा था कि आप ने उस पर शफ़्क़त करते हुवे इरशाद फ़रमाया : आइये ! हमारे साथ खाने में शामिल हो जाइये । लिहाज़ा वोह शख़्स खाने में शामिल हो गया । खाने से फ़रागत के बा'द आप ने हाथ धोए और उस की जानिब मुतवज्जेह हो कर उस की ह़ाजत पूछी । ह़ाजत सुन कर इरशाद फ़रमाया : अपने ऊंटों को ले आओ ! इस जगह से अपने ऊंटों को खिलाओ । उस ने आप की करम नवाज़ी देखी, तो बे साख़्ता कहने लगा : मेरे मां-बाप आप पर कुरबान ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह सख़ावत बे मिसाल है । (موسوعۃ ابن ابی الدنیا، مکارم الاخلاق، ۵۱۲/۳ مفھوماً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की करम नवाज़ी की क्या ही बात है ! कभी आप किसी की मुश्किल दूर फ़रमाते, कभी किसी ग़रीब की ह़ाजत पूरी फ़रमाते, कभी किसी मुसाफ़िर को नवाज़ते, तो कभी किसी की मजबूरी व बेबसी का ज़िक्र सुन कर उस की इमदाद के लिये कमर बस्ता हो जाते क्यूंकि सख़ावत का अ़ज़ीम वस्फ़ आप को अपने प्यारे नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से विरासत में मिला था । जैसा कि :

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने लाडले नवासे के बारे में खुद इरशाद फ़रमाया कि हुसैन मेरी जुरअत और सख़ावत का वारिस है । (معجم کبیر، زینب بنت ابی رافع عن فاطمہ، ۴۲۳/۲۲، حدیث:۱۰۴۱ ملتقطاً) लिहाज़ा आप जूदो सख़ावत में अपनी मिसाल आप थे । आइये ! आप की करीमाना सख़ावत से मुतअ़ल्लिक़ 2 मज़ीद ह़िकायात सुनते हैं ।

www.dawateislami.net

﴾1﴿...एक एक हज़ार दीनार की पांच थैलियां

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अपनी तंगदस्ती और फ़क़्रो फ़ाक़ा की शिकायत की। आप ने फ़रमाया : थोड़ी देर बैठ जाओ ! हमारा वज़ीफ़ा आने वाला है, जैसे ही वज़ीफ़ा पहुंचेगा हम आप को रुख़्सत कर देंगे। अभी कुछ ही देर गुज़री थी कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से एक एक हज़ार दीनार (या'नी सोने के सिक्कों) की पांच थैलियां आप की बारगाह में पेश की गईं। क़ासिद ने अ़र्ज़ की : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मा'ज़िरत की है कि येह थोड़ी सी रक़म है, इसे क़बूल फ़रमा कर ग़रीबों में तक़्सीम फ़रमा दीजिये। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह सारी रक़म उस ग़रीब आदमी के ह़वाले कर दी और इस करम नवाज़ी के बा वुजूद ताख़ीर पर मा'ज़िरत फ़रमाई।

(کشف المحجوب، باب فی ذکر آئمتہم من اہل البیت، ص۷۷)

या शहीदे करबला फ़रयाद है नूरे चश्मे फ़ात़िमा फ़रयाद है
है मेरी ह़ाजत मैं त़यबा में मरूं ऐ मेरे ह़ाजत रवा फ़रयाद है
मुफ़्लिसो नाचारो ख़स्ता ह़ाल हूं मख़्ज़ने जूदो अ़त़ा फ़रयाद है
बख़्त की हैं जिस क़दर भी गुथ्थियां सारी सुलझा दो शहा ! फ़रयाद है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 586 ता 588)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿...चरवाहे को नवाज़ दिया

एक मरतबा नवासए मुस्त़फ़ा, जिगर गोशए शेरे ख़ुदा, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का गुज़र एक चरवाहे के पास से हुवा जो बकरियां चरा रहा था। वोह चरवाहा आप के पास ह़ाज़िर हुवा और तोह़्फ़े के त़ौर पर एक बकरी आप की ख़िदमत में पेश कर दी। आप ने उस से पूछा कि तुम आज़ाद हो या ग़ुलाम ? उस ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं ग़ुलाम हूं। आप ने वोह बकरी उसे वापस लौटा दी। उस ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! येह मेरी अपनी बकरी

www.dawateislami.net

है, तो आप ने बकरी क़बूल फ़रमा ली फिर आप ने उस ग़ुलाम को भेड़ बकरियों समेत उस के आक़ा से ख़रीद कर आज़ाद फ़रमा दिया और भेड़ बकरियां उसे तोहफ़े में दे दीं।

(مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب البیوع والاقضیۃ، باب فی الرجل یھدی الرجل الخ، ۵/۳۸۹، حدیث: ۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सख़ावत के करीमाना अन्दाज़ के बारे में हम ने सुना। हमें भी चाहिये कि हम भी सख़ावत जैसी अज़ीम सिफ़त अपने अन्दर पैदा करने की कोशिश करें और अपनी इस्तिताअत के मुताबिक़ अपने परेशान हाल मुसलमान भाइयों की मदद किया करें। हदीसे पाक में है : क़ियामत के रोज़ जब कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अर्श के सिवा कोई साया न होगा, तीन शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अर्श के साए में होंगे। अर्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग होंगे ? इरशाद फ़रमाया : (1) जिस ने मेरे किसी उम्मती की परेशानी दूर की होगी। (2) जिस ने मेरी सुन्नत को ज़िन्दा किया होगा। (3) और जिस ने मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे।

(بستان الواعظین، مجلس فی قولہ تعالی ان اللہ وملئکتہ...الخ، ص۲۶۱-۲۶۰)

लिहाज़ा हमें चाहिये कि जो माल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें अता फ़रमाया है उस के ज़रीए अपने अज़ीज़ रिश्तेदारों और ग़रीबों के साथ ख़ैर ख़्वाही किया करें। आइये ! सख़ावत का जज़्बा दिल में पैदा करने के लिये सख़ावत व सदक़े के बारे में तीन **फ़रामीने मुस्तफ़ा** सुनते हैं।

सख़ावत व सदक़े के बारे में तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा

1. सख़ी आदमी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से, जन्नत से और लोगों से क़रीब है और दोज़ख़ से दूर है। (ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باما جاء فی السخاء، ۳/۳۸۷، حدیث: ۱۹۶۸)
2. तीन बातें वोह हैं जिन पर मैं क़सम खा सकता हूं और उन में से एक बात की मैं तुम्हें ख़बर देता हूं, उसे याद रखो कि किसी बन्दे का माल सदक़ा करने से कम नहीं होता।

(مسند احمد، حدیث ابی کبشۃ الانماری رضی اللہ عنہ، ۶/۲۹۸، حدیث: ۱۸۰۵۳، ملتقطا)

www.dawateislami.net

3. नमाज़ (ईमान की) दलील है और रोज़ा (गुनाहों से) ढाल है और सदक़ा ख़ताओं को इस त़रह़ मिटा देता है जैसे पानी आग को।

(ترمذي، كتاب السفر، باب ماذُكر في فضل الصلاة، ٢/١١٧، حديث: ٦١٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मैदाने करबला में, करबला वालों को किस क़दर मुश्किलात का सामना करना पड़ा मगर उन मुश्किल घड़ियों में भी उन मुबारक हस्तियों ने अपने करीमाना अन्दाज़ में कोई तब्दीली नहीं आने दी बल्कि उन कठिन ह़ालात में ज़ाहिरी बे सरो सामानी के बा वुजूद भी अपनी सख़ावत के दरया बहाते रहे। आइये ! इस सिलसिले में ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की करम नवाज़ी का एक वाक़िआ़ सुनते हैं।

अनोखी सख़ावत

वाक़िअ़ए करबला के बा'द अहले बैत को मदीनए मुनव्वरा तक पहुंचाने के लिये जिस शख़्स को मुक़र्रर किया गया था वोह बहुत नेक दिल था, उस ने पूरे रास्ते अहले बैत की ज़रूरिय्यात का ख़याल रखा और उन के साथ नर्मी और हुस्ने सुलूक से पेश आया। जब येह क़ाफ़िला मदीनए मुनव्वरा पहुंच चुका, तो शहज़ादिये शेरे ख़ुदा, ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की छोटी बहन फ़ात़िमा बिन्ते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन से अ़र्ज़ की : इस शख़्स ने पूरे सफ़र में हमारा ख़ूब ख़याल रखा है, हमें भी इसे कुछ न कुछ इन्आ़म देना चाहिये। ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि हम इस शख़्स को सिर्फ़ अपने ज़ेवरात ही पेश कर सकते हैं। चुनान्चे, दोनों शहज़ादियों ने अपने कंगन वग़ैरा उतार कर उसे दे दिये और साथ ही मा'ज़िरत भी की (कि इस के इ़लावा हमारे पास देने के लिये कुछ भी नहीं)। उस शख़्स ने वोह तमाम सामान वापस लौटा दिया और अ़र्ज़ की : अगर मैं ने वोह ख़िदमत गुज़ारी दुन्यवी मफ़ाद के लिये की होती, तो यक़ीनन इस इन्आ़म पर मुझे ख़ुशी होती मगर मैं ने तो वोह ख़िदमत सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुश्नूदी और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आप लोगों की क़राबत दारी की वज्ह से की थी।

(الكامل فى التاريخ، ج٣، ص ٤٤٠)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि अहले बैते अत़्हार की करम नवाज़ी किस क़दर आ'ला दरजे की थी कि ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अ़क़ीदत का इज़्हार करने और अहले बैत के साथ ह़ुस्ने सुलूक से पेश आने वाले को न सिर्फ़ अपने ज़ेवरात अ़त़ा फ़रमा दिये बल्कि इस बात पर उस से मा'ज़िरत का इज़्हार भी फ़रमाया कि इस के इ़लावा तुम्हें देने के लिये हमारे पास मज़ीद कोई चीज़ नहीं। इन मुबारक हस्तियों के रौशन किरदार से हमें येह मदनी फूल मिलता है कि अगर कोई शख़्स हमारे साथ अच्छा बरताव करे, तो बदले में हमें भी उस के शुक्रिया के त़ौर पर उस के साथ अच्छा बरताव करना चाहिये। ह़दीसे पाक में है : مَنْ لَمْ یَشْکُرِ النَّاسَ لَمْ یَشْکُرِ اللّٰہَ जो लोगों का शुक्र अदा नहीं करता, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का भी शुक्र गुज़ार नहीं होता।

(ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الشکر...الخ، ۳/ ۳۸۴، حدیث: ۱۹۶۲)

इस ह़िकायत से हमें येह मदनी फूल भी मिलता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने और प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अपनी सच्ची मह़ब्बत का इज़्हार करने के लिये हमें भी अपने दिल में अहले बैत की अ़क़ीदतो मह़ब्बत का चराग़ रौशन रखना चाहिये क्यूंकि मह़ब्बते अहले बैत दुन्या व आख़िरत की सआ़दतें ह़ासिल होने के इ़लावा शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा ह़ासिल होने का भी ज़रीआ़ है। जैसा कि :

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो शख़्स वसीला ह़ासिल करना चाहता है और येह चाहता है कि मेरी बारगाह में उस की कोई ख़िदमत हो जिस के सबब मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूं, उसे चाहिये कि मेरे अहले बैत की ख़िदमत करे और उन्हें ख़ुश करे। (बरकाते आले रसूल, स. 110)

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! किस क़दर ख़ुश क़िस्मत है वोह मुसलमान जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आले पाक की ख़ुशी का सबब बने। आइये ! अहले बैते अत़्हार के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल मज़ीद तीन **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** सुनते हैं।

www.dawateislami.net

1. इरशाद फ़रमाया : जो मेरे अहले बैत में से किसी के साथ अच्छा सुलूक करेगा, मैं क़ियामत के दिन उसे इस का सिला अ़त़ा फ़रमाऊंगा।

(جامع صغیر، حرف المیم، ص ۵۳۳، حدیث: ۸۸۲۱)

2. इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स औलादे अ़ब्दुल मुत्त़लिब में से किसी के साथ दुन्या में नेकी (या'नी भलाई) करेगा, उस का सिला देना मुझ पर लाज़िम है जब वोह क़ियामत के दिन मुझ से मिलेगा।

(تاریخ بغداد، حرف المیم من آباء العبادلة، ۱۰/۱۰۲، حدیث: ۵۲۲۱)

3. इरशाद फ़रमाया : सितारे आसमान वालों के लिये बाइ़से अम्न हैं और मेरे अहले बैत मेरी उम्मत के लिये बाइ़से अम्न हैं।

(کنز العمال، کتاب الفضائل، باب اہل البیت، جز ۱۲، ۶/۴۵، حدیث: ۳۴۱۵۰)

*क्या बात **रज़ा** उस चमनिस्ताने करम की*
ज़हरा है कली जिस में हुसैन और ह़सन फूल

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 79)

मुख़्तसर वज़ाह़त : आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस शे'र में अपने आप को मुख़ात़ब कर के यूं इरशाद फ़रमाते हैं : ऐ रज़ा ! उस करम व रह़मत वाले बाग़ की क्या बात है ! जिस बाग़े रिसालत की कली सय्यिदतुन्निसा, फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا और सय्यिदा शबाबे अहलिल जन्नत, इमामे ह़सन व इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا जिस महकते बाग़ के फूल हों।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ अहले बैते अत़्हार की मह़ब्बत दुन्या व आख़िरत में नजात पाने और शफ़ाअ़त का ज़रीआ़ है, ऐसे ही इस पाक घराने से बुग़्ज़ो इनाद रखना हलाकत का सबब है। जैसा कि बह़्रोबर के बादशाह, दो आ़लम के शहनशाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली, ह़ज़रते फ़ात़िमा और ह़ज़राते ह़-सनैने करीमैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم से इरशाद फ़रमाया : जो तुम से जंग करे, मैं उस से जंग करूंगा और जो तुम से सुल्ह़ करे, उस की मुझ से सुल्ह़ है। (ترمذی، کتاب المناقب، باب فضل فاطمة، ۵/۴۶۵، حدیث: ۳۸۹۶)

www.dawateislami.net

एक और ह़दीसे पाक में है : ख़बरदार ! जो शख़्स अहले बैत की बुग़्ज़ो अ़दावत पर मरा, वोह क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आएगा कि उस की दोनों आंखों के दरमियान लिखा होगा कि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से ना उम्मीद है और आगाह हो जाओ ! जो शख़्स अहले बैत से बुग़्ज़ो अ़दावत की ह़ालत पर मरा, वोह काफ़िर मरा और कान खोल कर सुन लो ! जो शख़्स अहले बैत की बुग़्ज़ो अ़दावत पर मरा, उसे जन्नत की ख़ुश्बू भी नसीब न होगी।

(الشرف المؤبد، ص ١٠٥)

बाग़े जन्नत के हैं बहरे मद्ह़ ख़्वाने अहले बैत
तुम को मुज़्दा नार का ऐ दुश्मनाने अहले बैत !

(ज़ौक़े ना'त, स. 59)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि अहले बैत से बुग़्ज़ रखने की कैसी सख़्त वई़दें हैं ! लिहाज़ा हमें चाहिये कि हर दम उन का ख़ूब अदबो एह़तिराम करें और अहले बैत से अ़दावत व दुश्मनी रखने वालों की सोह़बत से कोसों दूर रहें क्यूंकि सोह़बत ज़रूर रंग लाती है। अगर अच्छों की सोह़बत मिल जाए, तो इन्सान में अच्छाई पैदा हो ही जाती है और दिल भी गुनाहों से बेज़ार, नेकियों का त़लबगार और बुज़ुर्गाने दीन और अहले बैते अत़्हार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की मह़ब्बत से सरशार हो ही जाता है और इस के बर अ़क्स अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता बुरी सोह़बत मुयस्सर आ जाए, तो इन्सान न चाहते हुवे भी बुराइयों में मुब्तला हो ही जाता है। लिहाज़ा औलिया और अहले बैत से अ़क़ीदतो मह़ब्बत रखने वालों ही की सोह़बत इख़्तियार की जाए ताकि उन की सोह़बत की बरकत से हमें भी उन नेक हस्तियों का अदबो एह़तिराम नसीब हो।

बद क़िस्मती से आज कल बुरी सोह़बतें इस क़दर आ़म हो चुकी हैं कि अच्छी सोह़बत मिलना मुश्किल हो चुका है। ऐसे ह़ालात में اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी ने'मत है जो अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ करने के अ़ज़ीम मदनी मक़्सद

www.dawateislami.net

के पेशे नज़र लोगों को गुनाहों से बचाने, नेकियों की राह पर लाने और उन्हें औलिया व अहले बैते अत़्हार की मह़ब्बत घोल कर पिलाने में मसरूफ़े अ़मल है। लिहाज़ा हम सब दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहें और गुनाहों से नफ़रत, नेकियों की रग़बत और अहले बैत की सच्ची मह़ब्बत अपने दिल में पैदा करने के लिये वक़्तन फ़-वक़्तन दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में भी सफ़र करते रहें बल्कि तमाम इस्लामी भाई करबला वालों के करीमाना अन्दाज़ को नज़रानए अ़क़ीदत पेश करते हुवे शहीदानो असीराने करबला के ईसाले सवाब की निय्यत से बिल ख़ुसूस आ़शूरा (8, 9, 10 या 9, 10, 11 मोह़र्रमुल ह़राम) के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र के लिये अभी से निय्यत फ़रमा लीजिये, इस की ख़ूब ख़ूब बरकतें ह़ासिल होंगी और अहले बैते अत़्हार की मह़ब्बत में इज़ाफ़ा होगा। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो — सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
औलिया का करम, तुम पे हो ला जरम — ख़ूब जल्वे मिलें, क़ाफ़िले में चलो
औलियाए किराम उन का फ़ैज़ाने आ़म — लूटने सब चलें, क़ाफ़िले में चलो
*या ख़ुदा ! हर घड़ी रट हो **अ़त्तार** की — क़ाफ़िले में चलें, क़ाफ़िले में चलो*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 672)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रिसाला "इमामे हुसैन की करामात" का तआ़रुफ़

करबला वालों की मह़ब्बत व उल्फ़त दिल में पैदा करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के रिसाले "**इमामे हुसैन की करामात**" का मुत़ालआ़ निहायत मुफ़ीद है। येह रिसाला इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत, आप के फ़ज़ाइलो कमालात और करामात के इ़लावा यज़ीद और यज़ीदियों के दर्दनाक अन्जाम की मा'लूमात और आ़शूरा के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल अनमोल रिसाला है। लिहाज़ा आज ही येह रिसाला मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कर के ख़ुद भी इस का मुत़ालआ़ कीजिये और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी इस की तरग़ीब दीजिये।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शो'बए तराजिम की कोशिशों से इस रिसाले का इंगलिश, हिन्दी, सिन्धी और गुजराती समेत कुल 7 ज़बानों में तर्जमा हो चुका है। दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से इस किताब को रीड (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! करबला वालों के मज़ीद करीमाना अन्दाज़ के बारे में सुनते हैं। चुनान्चे, ह़क़ तलफ़ी करने वाले को मुआ़फ़ करना और दरगुज़र से काम लेना भी अहले बैते अत़्हार के बे मिसाल करीमाना अन्दाज़ का ह़िस्सा है। मुआ़फ़ करना नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बहुत ही प्यारी सुन्नत होने के साथ साथ दीनी और दुन्यवी ए'तिबार से बहुत ही उ़म्दा ख़स्लत है। क़ुरआने करीम में अ़फ़्वो दरगुज़र से काम लेने का हुक्म भी दिया गया है। जैसा कि पारह 9, सूरतुल आ'राफ़ की आयत नम्बर 199 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۱۹۹﴾ (پ۹، الاعراف:۱۹۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ मह़बूब ! मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो।*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुआ़फ़ी की बरकत से बाहमी सुल्ह़ की फ़ज़ा पैदा होती है, आपस के मसाइल ह़ल होते हैं, बाहमी नाराज़ियों का ख़ातिमा होता है, आपस में मह़ब्बत बढ़ती है और दिल में बुग़्ज़ो कीना के जज़्बात पैदा नहीं होते। लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि करबला वालों के अन्दाज़े करीमाना की नक़्ल करते हुवे अ़फ़्वो दरगुज़र से काम लिया करें। किसी मुसलमान का क़ुसूर मुआ़फ़ करने से मुआ़फ़ करने वाले की इ़ज़्ज़त कम नहीं हो जाती बल्कि उस में इज़ाफ़ा होता है। चुनान्चे, ह़दीसे पाक में है : किसी को मुआ़फ़ करने की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (मुआ़फ़ करने वाले) बन्दे की इ़ज़्ज़त ही में इज़ाफ़ा फ़रमाता है। (مسلم مُسلِم، کتاب البر... الخ، باب استحباب العفو و التواضع، ص۱۰۷۱، حدیث:۲۵۹۲)

www.dawateislami.net

आइये ! अ़फ़्वो दरगुज़र से मुतअ़ल्लिक़ करबला वालों के करीमाना अन्दाज़ के बारे में तीन वाक़िआ़त सुनते हैं।

《1》...गालियां देने वाले को दुआ़एं दीं

एक मरतबा इ़साम बिन मुस्त़लिक़ नामी, मुल्के शाम का एक बाशिन्दा जो कि मौलाए काइनात, ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बुग़्ज़ रखता था, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने उन्हें और उन के वालिदे मोह़्तरम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुरा भला कहने लगा। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे झिड़कने, उलझने या तल्ख़ कलामी से कोई जवाबी कारवाई करने के बजाए اَعُوْذُ بِاللہ और **बिस्मिल्लाह** पढ़ने के बा'द येह आयाते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِیْنَ ﴿۱۹۹﴾ وَاِمَّا یَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّیْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِؕ اِنَّهٗ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۲۰۰﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓىٕفٌ مِّنَ الشَّیْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَۚ ﴿۲۰۱﴾

(پ۹، الاعراف: ۱۹۹-۲۰۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ मह़बूब ! मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो और ऐ सुनने वाले ! अगर शैत़ान तुझे कोई कूंचा दे (किसी बुरे काम पर उक्साए) तो अल्लाह की पनाह मांग बेशक वोही सुनता जानता है। बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैत़ानी ख़याल की ठेस लगती है, होश्यार हो जाते हैं, उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं।*

फिर फ़रमाया : अपने ऊपर बोझ हल्का रख और मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तेरे लिये और अपने लिये मग़्फ़िरत का सुवाल करता हूं। इस के इ़लावा आप उस के साथ इस क़दर अ़फ़्वो दरगुज़र, नर्मी और ख़न्दा पेशानी से पेश आए कि उस का बुग़्ज़ो अ़दावत एक दम मह़ब्बत में तब्दील हो गया और वोह येह कहने पर मजबूर हो गया : وَمَا عَلَی وَجْهِ الْاَرْضِ اَحَبُّ اِلَیَّ مِنْهُ وَمِنْ اَبِیْهِ रूए ज़मीन पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन और उन के वालिद ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से ज़ियादा मेरे नज़दीक कोई मह़बूब नहीं।

(تفسیر البحر المحیط، پ۹، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۹۹، ۴/۴۴۶، تفسیر قرطبی پ۹، الاعراف، ۴/۲۵۰، ملخصاً)

www.dawateislami.net

गालियां सुन कर दुआ़ देते हो तुम ऐ शहीदे करबला ! तुम पर सलाम
है फ़लाहो कामरानी, नर्मी व आसानी में हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿...गाली देने वाले के साथ ख़ैर ख़्वाही

एक मरतबा इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को किसी ने गाली दी, तो आप ने (गुस्सा होने और इन्तिक़ामी कारवाई करने के बजाए) उसे अपना मुबारक कुर्ता और एक हज़ार दिरहम देने का हुक्म दिया। किसी ने कहा : आप ने पांच ख़स्लतें जम्अ़ कर ली हैं। (1) बुर्दबारी (2) तक्लीफ़ न देना (3) उस शख़्स को ऐसी बात से रिहाई देना जो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर कर देती (4) उसे तौबा व नदामत की त़रफ़ राग़िब करना (5) बुराई के बा'द ता'रीफ़ की त़रफ़ रुजूअ़ करना। आप ने मा'मूली दुन्या के साथ येह तमाम अ़ज़ीम चीज़ें ख़रीद लीं।

(इह़याउल उ़लूम, 3 / 221)

﴾3﴿...मैं ने अपना गुस्सा पी लिया

एक बार इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन की लौन्डी वुज़ू करवा रही थी, अचानक उस के हाथ से बरतन आप के चेहरे पर गिर गया जिस से चेहरा ज़ख़्मी हो गया। आप ने उस की त़रफ़ सर उठा कर देखा, तो उस ने अ़र्ज़ की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ" और गुस्सा पीने वाले। इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ने अपना गुस्सा पी लिया। उस ने फिर अ़र्ज़ की : "وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ" और लोगों से दरगुज़र करने वाले। इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे मुआ़फ़ करे। फिर अ़र्ज़ गुज़ार हुई : "وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ" और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एह़सान करने वालों को पसन्द फ़रमाता है। इरशाद फ़रमाया : जा ! तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आज़ाद है। (ابن عساکر، ذکر من اسمہ علی، علی بن الحسین بن علی بن ابی طالب، ۴۱/۳۸۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि येह ह़ज़रात कितने नर्म मिज़ाज और बुर्दबार हुवा करते। लोगों की ग़लति़यों पर उन को डांटने,

www.dawateislami.net

झिड़क्ने और उन के साथ उलझने के बजाए उन के कुसूर को मुआ़फ़ करने वाले होते थे। हम करबला के जा निसारों से मह़ब्बत का दम तो भरते हैं लेकिन हमें इस पर भी ग़ौर कर लेना चाहिये कि क्या हम भी दूसरों की ग़लति़यों को मुआ़फ़ करते हैं ? या उन से फ़ौरन बदला लेने का, इन्तिक़ामी कारवाई करने का जज़्बा दिल में जोश मारने लगता है और तक्लीफ़ पहुंचाने वाले को ईंट का जवाब पथ्थर से देने के लिये बड़ी तक्लीफ़ पहुंचाने की कोशिश करते हैं ! नीज़ कनीज़ को मुआ़फ़ करने और रिज़ाए इलाही के लिये आज़ाद करने से मुतअ़ल्लिक़ आख़िर में जो ह़िकायत सुनी उस में उन लोगों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है कि जो अपने मुलाज़िमीन के साथ निहायत ग़ैर मुनासिब सुलूक करते हैं और उन की मा'मूली ग़लति़यों पर उन्हें ख़ूब झाड़ पिलाते और उन की ह़ौसला शिकनी व दिल आज़ारी करते हैं। इस के बजाए हम में से हर एक को चाहिये कि अपने मातह़तों के साथ ह़ुस्ने अख़्लाक़ से पेश आए, उन की ग़लति़यों पर उन्हें प्यार और मह़ब्बत से समझाए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये उन से अ़फ़्वो दरगुज़र करे, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की ख़ूब ख़ूब बरकतें और रह़मतें ह़ासिल होंगी। अह़ादीस में अ़फ़्वो दरगुज़र के कसीर फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं। आइये ! मुआ़फ़ करने की फ़ज़ीलत के बारे में अह़ादीसे मुबारका सुनते हैं।

1. ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब लोग ह़िसाब के लिये ठहरे होंगे, तो उस वक़्त एक मुनादी येह ए'लान करेगा कि जिस शख़्स का अज्र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है, वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए। फिर दूसरी बार ए'लान करेगा कि जिस का अज्र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है, वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए। पूछा जाएगा कि वोह कौन है जिस का अज्र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है ? मुनादी कहेगा : उन का जो लोगों (की ख़त़ाओं) को मुआ़फ़ करने वाले हैं। फिर तीसरी बार मुनादी ए'लान करेगा : जिस का अज्र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए

www.dawateislami.net

करम पर है, वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए । तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे ।

(معجم الاوسط، باب الالف، من اسمہ احمد، ۱/۵۴۲، حدیث: ۱۹۹۸ملتقطا)

2. ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) मह़ल बनाया जाए और उस के दरजात बुलन्द किये जाएं, तो उसे चाहिये कि जो उस पर ज़ुल्म करे, वोह उसे मुआ़फ़ कर दे और जो उसे मह़रूम करे, वोह उसे अ़ता करे और जो उस से तअ़ल्लुक़ात तोड़े, वोह उस से तअ़ल्लुक़ात जोड़े ।

(مستدرک، کتاب التفسیر، شرح آیة: کنتم خیر امّة۔۔۔ الخ، ۳/۱۲، الحدیث: ۳۲۱۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि जब कोई हमें बुरा भला कहे या हमारे साथ बुरा सुलूक करे, तो अहले बैते अत़्हार के करीमाना अन्दाज़ को पेशे नज़र रखते हुवे दरगुज़र से काम लें । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अ़फ़्वो दरगुज़र करने का जज़्बा नसीब फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 85)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "सदाए मदीना"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अहले बैत की सच्ची मह़ब्बत, जज़्बए अ़फ़्वो दरगुज़र, नेकियों की रग़बत और गुनाहों से नफ़रत दिल में पैदा करने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये और 12 मदनी कामों में भी बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये । 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम रोज़ाना "**सदाए मदीना**" लगाना भी है । दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने को **सदाए मदीना** लगाना कहते हैं ।

www.dawateislami.net

हमें भी चाहिये कि हम भी मसाजिद की आबाद कारी के लिये इस मदनी काम में अपना हि़स्सा शामिल करें और दा'वते इस्लामी का साथ दें। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! सदाए मदीना ऐसा प्यारा मदनी काम है जिस में उख़्रवी फ़वाइद के साथ साथ ति़ब्बी व दुन्यवी फ़वाइद भी ह़ासिल होते हैं।

आइये ! सदाए मदीना लगाने के दुन्यवी फ़वाइद सुनते हैं। मसलन ❖ सदाए मदीना की बरकत से सुब्ह़ की ताज़ा हवा मिलती है। ❖ सदाए मदीना की बरकत से पैदल चलना नसीब होगा क्यूंकि ❖ पैदल चलने से इन्सान सिह़्ह़त मन्द रहता है। ❖ पैदल चलने से इन्सानी हाज़िमा दुरुस्त रहता है। ❖ पैदल चलने से इन्सान मुख़्तलिफ़ बीमारियों (मसलन हार्ट अटेक, फ़ालिज, लक़्वा वग़ैरा) से बच जाता है। ❖ पैदल चलने से हड्डियां मज़बूत़ होती हैं। ❖ पैदल चलने से वज़्न ए'तिदाल में रहता है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदाए मदीना लगाना (या'नी नमाज़ के लिये लोगों को जगाना) सुन्नते मुस्त़फ़ा व सुन्नते सह़ाबा है। अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़े फ़ज्र के लिये लोगों को जगाते हुवे मस्जिद तशरीफ़ लाते थे। (طبقات کبریٰ، ذکر استخلاف عمر، ۳/۲۶۳،مفہوماً) सदाए मदीना लगाने से कैसी कैसी बरकतें मिलती हैं इस का अन्दाज़ा इस मदनी बहार से लगाइये। चुनान्चे,

सरकार की बारगाह से बुलावा आ गया

मुल्के मुर्शिद के एक शहर के एक अ़लाके़ के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता तो था लेकिन मदनी कामों के सिलसिले में सुस्ती का शिकार था। हु़स्ने इत्तिफ़ाक़ से मोह़र्रमुल ह़राम सिने 1431 हि., ब मुत़ाबिक़ जनवरी सिने 2010 ई. को दा'वते इस्लामी के डिवीज़न मुशावरत के ज़िम्मेदार इस्लामी भाई से मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल हुवा। जब उन्हें मेरी मदनी कामों में अ़दम दिलचस्पी का इ़ल्म हुवा, तो इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे न सिर्फ़ मदनी काम करने का ज़ेह्न दिया बल्कि सदाए मदीना की पाबन्दी करने की तरग़ीब भी दिलाई। (मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही करते हुवे उन्हें नमाज़े फ़ज्र के लिये

www.dawateislami.net

जगाने को दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में "**सदाए मदीना**" लगाना कहते हैं) नीज़ इस ज़िम्न में उन्हों ने मुझे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का फ़रमान : "**सदाए मदीना, दिखाए मदीना**" भी सुनाया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मेरा ज़ेह्न बन गया और ह़ाज़िरिये मदीना की उम्मीद पर अगले ही दिन मैं ने इस पर अ़मल शुरूअ़ कर दिया । सदाए मदीना क्या लगानी शुरूअ़ की, मुझ पर तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का करम हो गया, मेरे तो वारे ही नियारे हो गए । क़िस्मत का सितारा यूं चमका कि उसी साल मुझे बारगाहे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़ाज़िरी का शरफ़ ह़ासिल हो गया । करम बालाए करम येह कि सदाए मदीना की बरकत से मेरे बड़े भाई को भी ह़ज की सआ़दत नसीब हो गई । दौराने ह़ज शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बैअ़त होने का शरफ़ भी मिल गया । शायद येह मदीने शरीफ़ की ह़ाज़िरी और एक वलिये कामिल से बैअ़त की बरकत थी कि मेरे भाई जो पहले नमाज़ों की अदाएगी में सुस्ती का शिकार थे लेकिन अब तमाम गुनाहों से तौबा कर के नेकियों की जानिब माइल होने लगे, बा जमाअ़त नमाज़ का एहतिमाम करने लगे, दाढ़ी शरीफ़ की भी निय्यत कर ली । ह़ज से वापसी आने के कमो बेश दो माह बा'द जब कि एक अ़ज़ीज़ की शादी में शरीक थे, बारात आने ही वाली थी लेकिन जूंही नमाज़ का वक़्त हुवा सब को ब आवाज़े बुलन्द नमाज़ की दा'वत दी और मस्जिद की जानिब चल दिये, जब वुज़ू के लिये वुज़ू ख़ाने पर पहुंचे, तो अचानक दिल का दौरा पड़ने की वज्ह से गिर पड़े । नमाज़ियों ने आगे बढ़ कर उठाया और मस्जिद में लिटा दिया, मस्जिद में लिटाते ही उन की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई । वहां मौजूद सभी लोग भाईजान की इस ईमान अफ़रोज़ वफ़ात पर अफ़्सोस के साथ साथ रश्क करने लगे । (चमकदार कफ़न, स. 10)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी और 12 मदनी कामों में दिलचस्पी किस क़दर बाइ़से बरकत है । लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहते हुवे 12 मदनी कामों में शुमूलिय्यत और सुन्नतों की ख़िदमत के ज़रीए़ अपनी दुन्या व आख़िरत को बेहतर बनाने के लिये कोशां रहें ।

www.dawateislami.net

मजलिसे जामिआ़तुल मदीना

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी अब तक 103 से ज़ाइद शो'बाजात में सुन्नतों की ख़िदमत में मसरूफ़े अ़मल है, इन्ही में से एक शो'बा "**जामिअ़तुल मदीना**" भी है । शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दिली ख़्वाहिश के तह़्त इ़ल्मे दीन को आ़म करने के लिये दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम जामिअ़तुल मदीना की सब से पहली शाख़ 1995 ई. में मुल्के मुर्शिद के शहर बाबुल मदीना के एक अ़लाक़े में खोली गई और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब तक दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक मसलन मुल्के मुर्शिद, हिन्द, जुनूबी अफ़रीक़ा, इंगलैन्ड, नेपाल और बंगलादेश वग़ैरा में जामिअ़तुल मदीना लिल बनीन और लिल बनात क़ाइम हैं जिन में हज़ारों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इ़ल्मे दीन ह़ासिल कर के न सिर्फ़ अपनी इ़ल्मी प्यास बुझा रहे हैं बल्कि दूसरों को भी फ़ैज़ाने इ़ल्म से मुनव्वर करने में मसरूफ़ हैं । इन जामिअ़तुल मदीना की खु़सूसिय्यत येह है कि दीनी ता'लीम से आरास्ता करने के साथ साथ त़लबा की अख़्लाक़ी तरबिय्यत भी की जाती है, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि अपने बच्चों को जामिआ़तुल मदीना में दाख़िल करवा के इन को इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने का मदनी ज़ेह्न दें, खु़द भी इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की कोशिश करते रहें ।

बयान का खु़लासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम ने **करबला वालों के करीमाना अन्दाज़** सुनने की सआ़दत ह़ासिल की, कि ❖ करबला वाले ग़ुस्सा करने के बजाए ग़ुस्सा पीने वाले, लोगों की ग़लति़यों को मुआ़फ़ करने वाले और सब से अ़फ़्वो दरगुज़र का मुआ़मला फ़रमाने वाले थे । ❖ करबला वाले ज़मीन में फ़ितना व फ़साद से बचने वाले और अम्नो सुकून क़ाइम करने वाले थे । ❖ करबला वाले ख़ूब सदक़ा व ख़ैरात करने वाले थे । ❖ करबला वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और दीने इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये अपना सब कुछ कुरबान कर देने वाले थे । लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि हम भी हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन पाकीज़ा घराने वालों की सीरत व

www.dawateislami.net

किरदार पर अ़मल कर के दुन्या व आख़िरत को रौशन बनाएं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुश्नूदी ह़ासिल करें।

पए हु़सैनो ह़सन, फ़ात़िमा, अ़ली है़दर
हमारे बिगड़े हुवे काम दे बना या रब

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 76)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की, उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

लिबास के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! सब से पहले **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

1. जिन्न की आंखों और लोगों के सित्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब कोई कपड़े उतारे, तो **बिस्मिल्लाह** कह ले। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ص۵۹حدیث ۲۵۰۴)
2. जो शख़्स कपड़ा पहने और येह पढ़े :

   اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ کَسَانِیْ ھٰذَا وَرَزَقَنِیْہِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّۃٍ

   तो उस के अगले, पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे।

   (شُعَبُ الْاِیمان ج۵ص۱۸۱حدیث ۶۲۸۵)
3. जो बा वुजूदे क़ुदरत ज़ेबो ज़ीनत का लिबास पहनना तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) के त़ौर पर छोड़ दे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को करामत का हुल्ला पहनाएगा। (ابوداوٗد ج۴ص۳۲۶حدیث ۴۷۷۸)

www.dawateislami.net

❖ ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक लिबास अक्सर सफ़ेद कपड़े का होता। (کَشْفُ الالْتِباس فِی اسْتِحْبابِ اللِّباس، ص۳٦)

❖ लिबास ह़लाल कमाई से हो और जो लिबास ह़राम कमाई से ह़ासिल हुवा हो, उस में फ़र्ज़ व नफ़्ल कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती।

(کَشْفُ الالْتِباس فِی اسْتِحْبابِ اللِّباس، ص۴۱)

❖ पहनते वक़्त सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये (कि सुन्नत है) मसलन जब कुर्ता पहनें, तो पहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ दाख़िल कीजिये फिर उल्टा हाथ उल्टी आस्तीन में। (کَشْفُ الالْتِباس فِی اسْتِحْبابِ اللِّباس، ص۴۳)

❖ इसी त़रह़ पाजामा पहनने में पहले सीधे पाइंचे में सीधा पाउं दाख़िल कीजिये और जब (कुर्ता या पाजामा) उतारने लगें, तो इस के बर अ़क्स (या'नी उलट) कीजिये या'नी उल्टी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये।

❖ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3, सफ़ह़ा 409 पर है : सुन्नत येह है कि दामन की लम्बाई आधी पिन्डली तक हो और आस्तीन की लम्बाई ज़ियादा से ज़ियादा दो उंगलियों के पौरों तक और चौड़ाई एक बालिश्त हो। (رَدُّالْمُحتار ج ۹ ص ۵۷۹)

❖ सुन्नत येह है कि मर्द का तेह्बन्द या पाजामा टख़्ने से ऊपर रहे।

(مراٰۃ ج٦ص۹۴)

❖ मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना ही लिबास पहने। छोटे बच्चों और बच्चियों में भी इस बात का लिह़ाज़ रखिये।

❖ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 481 पर है : मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से घुटनों के नीचे तक "**औ़रत**" है, या'नी इस का छुपाना फ़र्ज़ है, नाफ़ इस में दाख़िल नहीं और घुटने दाख़िल हैं। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ۲ ص ۹۳)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब (1) 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16** और (2) 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" इस

www.dawateislami.net

के इ़लावा शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत के दो रसाइल “**101 मदनी फूल**” और “**163 मदनी फूल**” हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

आ़शिक़ाने रसूल आएं, सुन्नत के फूल
देने लेने चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआ़एं

﴿1﴾ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ١٥١ ملخصًا)

﴿2﴾ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ٦٥)

www.dawateislami.net

﴾3﴿ **रहमत के सत्तर दरवाज़े :** صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रहमत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص۲۷۷)

﴾4﴿ **दुरूदे शफ़ाअ़त :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

शाफ़ेए उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج۲ص۳۲۹،حدیث۳۱)

﴾5﴿ **छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰہِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

﴾6﴿ **कुर्बे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया। इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है ! ! !** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص۱۲۵)

एक हज़ार दिन की नेकियां

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا ھُوَ اَھْلُہٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

www.dawateislami.net

गोया शबे क़द्र ह़ासिल कर ली

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने इस दुआ़ को 3 मरतबा पढ़ा तो गोया उस ने शबे क़द्र ह़ासिल कर ली । (تاریخ ابنِ عساکر،۱۹/۱۵۵،حدیث:۴۴۱۵)

दुआ़ येह है **:**

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ ، سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْم

(या'नी खुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 1163-1164)

www.dawateislami.net